# भजन

मेहरों पे मेहर धनी पल पल किए जाते हो
सुख देने रूहों को चरणों में बुलाते हो

1- ये दुख का खेल पिया इक लाड तुम्हारा है
कुम्हलाए न मुख रूह का दिया तुमने सहारा है
दुख लागे न दुख जैसा जब दिल से लगाते हो

2- चरकीन भरे ये तन न दिखें पिया तुमको
बस नजर पड़े रुह पर करते हो मेहर हम पर
खातिर अपनी अंगना गम कितने उठाते हो

3- कायम रहे इश्क ईमान माया न लगे भारी
धनी मेरे धनी की मैं रहे निसवत ये प्यारी
दिल मेरा इश्क तेरा भर भर के पिलाते हो